चेतन कुमार

बंधक

प्यार, धोखे और शोषण से भरी एक ऐसी कहानी
जो आपको रोमांच से भर देगी

बंधक

लेखक:चेतन कुमार

अस्वीकरण

यह पुस्तक एक रोमांटिक और क्राइम थ्रिलर है जिसमें वयस्कों के लिए उपयुक्त विषय और तनावपूर्ण दृश्य शामिल हैं। इस पुस्तक में वर्णित सभी पात्र, नाम और घटनाएँ पूरी तरह से काल्पनिक हैं। इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, वास्तविक घटना या स्थान से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई समानता पाई जाती है, तो वह केवल एक संयोग मात्र होगी। लेखक किसी भी प्रकार की हिंसा या उत्पीड़न का समर्थन नहीं करता है। पाठकों को सलाह दी जाती है कि यह पुस्तक केवल 18 वर्ष से अधिक आयु के पाठकों के लिए है।

कॉपीराइट © 2026 चेतन कुमार. ऑल राइट्स रिजर्व्ड.

1

सुधा मुंबई में रहती थी, किराये के फ्लैट में अपने दादाजी के साथ। उसका जन्म मुंबई में ही हुआ था। उसके माता-पिता जब वह बहुत छोटी थी, तभी इस दुनिया से चले गए थे। अब इस दुनिया में उसके दादाजी के सिवाय कोई नहीं था। 18 साल की सुधा एक बहुत ही खूबसूरत और यौवन से भरी हुई लड़की थी। खूबसूरत चेहरा, बड़ी-बड़ी भूरी आँखें, एक बेहतरीन सुडौल और कसा हुआ शरीर। वह इतनी खूबसूरत थी कि उसकी सोसाइटी के सारे लड़के उसके दीवाने थे, लेकिन वह किसी को भाव नहीं देती थी। लेकिन उसे पता नहीं था कि एक दिन यही जवानी और खूबसूरती उसकी दुश्मन बन जाएगी। सुधा ने अभी-अभी 12वीं कक्षा की परीक्षा पास की थी, वह पढ़ने में बहुत ही होशियार थी। 12वीं कक्षा में उसके 95% आए थे, और अब वह कॉलेज जाने लगी थी। लेकिन कॉलेज में भी उसके हुस्न के दीवाने कम नहीं थे, कई लड़के उसे लाइन मारते थे। लेकिन सुधा बहुत सीधी और शरीफ लड़की थी, उसे यह सब बिल्कुल पसंद नहीं था। आज सुधा बहुत खुश थी क्योंकि आज उसके दादाजी का जन्मदिन था।

2

सुधा ने अपने दादाजी को संवारा और खुद भी अच्छे से तैयार हुई, और होती भी क्यों नहीं, आज उसके सबसे खास और इस दुनिया में इकलौते रिश्तेदार उसके दादाजी का जन्मदिन था। उसने आज गहरे गुलाबी रंग का सलवार-कमीज और उस पर हल्के गुलाबी रंग का दुपट्टा डाला था। माथे पर काली बिंदी और कानों में झुमके, आँखों में काजल उसके गोरे रंग पर खूब जच रहा था। वह इतनी सादगी में भी एकदम कयामत लग रही थी। लिपस्टिक लगाने की उसे जरूरत नहीं थी क्योंकि उसके होंठ पहले से ही गुलाबी थे। उसने फटाफट से बेकरी की दुकान से केक लिया और अपने दादाजी को गिफ्ट देने के लिए गिफ्ट की दुकान की तरफ बढ़ी। गिफ्ट की दुकान में उसने अपने दादाजी के लिए एक खास किस्म की घड़ी पसंद की जिसे चैन से बंद कर जेब में रखा जाता था। और फिर अपने दादाजी को सरप्राइज देने के लिए वह घर की तरफ चल पड़ी। घर पर आकर वह किचन में गई और अपने दादाजी का फेवरेट सूजी का हलवा बनाने लगी। दादाजी उस वक्त घर पर नहीं थे।

3

शाम का समय था तो वह बाहर गार्डन में टहलने गए हुए थे। रोज शाम को टहलना उन्हें काफी पसंद था। हलवा बनाकर सुधा ने पूरा घर एक बार ठीक किया। टेबल पर केक को अच्छे से सजा के रखा और दादाजी का इंतजार करने लगी। थोड़ी ही देर में दादाजी भी आ गए, आज वह काफी अच्छे लग रहे थे क्योंकि उन्होंने आज नई धोती और उस पर क्रीम कलर का कुर्ता पहना था। दादाजी के घर आते ही सुधा उनसे लिपट गई और हैप्पी बर्थडे विश किया। दादाजी ने भी उसे थैंक्यू कहा और घर के अंदर आ गए। टेबल पर केक देख उनके चेहरे पर अचानक से रौनक आ गई। उन्होंने सुधा की ओर देखा और कहा "इसकी क्या जरूरत थी।" सुधा ने कहा "बिल्कुल जरूरत थी, आज आपका खास दिन जो है।" यह सुनकर दादाजी हल्के से मुस्कुरा दिए। दोनों ने मिलकर केक काटा और एक-दूसरे को खिलाया। सुधा ने दादाजी के लिए गिफ्ट में लाई हुई घड़ी उन्हें दी जिसे देखकर दादाजी एकदम से भावुक हो गए। उन्होंने कुछ नहीं कहा, बस चुपचाप से वह घड़ी ले ली।

4

आखिर उनकी पोती ने प्यार से उनको दी थी। फिर दोनों ने खाना खाया और अपने-अपने कमरे में चले गए सोने के लिए। सुधा के कॉलेज में उसके साथ एक लड़का पढ़ता था, सौरभ नाम था उसका। वैसे तो सुधा को लड़कों में कोई दिलचस्पी नहीं थी लेकिन पता नहीं क्यों सौरभ की तरफ उसका थोड़ा झुकाव था। दिखने में भी सौरभ अच्छा था, लंबा कद और एक अच्छी बॉडी। हालांकि दोनों के बीच कुछ ज्यादा बात तो नहीं होती थी लेकिन कभी-कभी थोड़ी-बहुत बातचीत होती थी। सुधा जब भी सौरभ को देखती थी तो उसकी तरफ एक अजीब सा खिंचाव महसूस करती थी। हालांकि उसने भी यह महसूस किया कि सौरभ भी उसकी तरफ खिंचाव महसूस करता है, तभी तो वह किसी-न-किसी बहाने से उससे बात करने की कोशिश करता था। यह बात समझकर सुधा को बड़ा अच्छा लगता था कि सौरभ के मन में भी उसके लिए कुछ है। फिर धीरे-धीरे दोनों में दोस्ती होने लगी, बातचीत भी पहले से थोड़ी ज्यादा बढ़ गई। एक दिन जब सुधा कॉलेज से घर जाने के लिए निकली, उसने देखा कि सौरभ कॉलेज के गेट के बाहर खड़ा है।

5

शायद उसी का इंतज़ार कर रहा था, यह सोचकर सुधा ने मन में एक अजीब सी खुशी महसूस की। सौरभ ने कहा "हाय", तो उसने भी कहा "हाय"। फिर सुधा कुछ कह पाती, कुछ पूछ पाती उससे पहले सौरभ ने ही पूछ लिया कि क्या मेरे साथ कॉफी पीने चलोगी? सुधा को वैसे तो यह सब पसंद नहीं था लेकिन पता नहीं क्यों वह सौरभ को मना नहीं कर पाई और उसने हाँ कर दी। सौरभ ने बाइक निकाली और सुधा को इशारा किया पीछे बैठने का। सुधा भी बिना कुछ कहे सौरभ के पीछे बाइक पर बैठ गई। सौरभ ने बाइक आगे बढ़ाई, सुधा को यूँ सौरभ के पीछे बैठना बहुत अच्छा लग रहा था। खास कर जब भी कोई स्पीड ब्रेकर आता और सौरभ ब्रेक मारता और सुधा का सीना पीछे से सौरभ से टकरा जाता था, तो सुधा एकदम से अंदर तक हिल जाती थी। उसे एक अजीब सी गुदगुदी महसूस होती। फिर पता नहीं क्यों उसने यह महसूस किया कि सौरभ को भी उसका बार-बार यूँ पीछे टकराना अच्छा लग रहा था, तभी तो वह बार-बार जानबूझकर ब्रेक मार रहा था।

यह बात समझकर सुधा ने अपने अंदर एक अजीब सी सनसनी महसूस की, तब तक कॉफी शॉप भी आ गई। सौरभ ने बाइक साइड में पार्क की और सुधा के साथ अंदर एक टेबल पर आकर बैठ गया। दोनों ने कॉफी और सैंडविच ऑर्डर किया। हालांकि तब तक दोनों ने एक-दूसरे से कोई ज्यादा बात शुरू नहीं की थी। वे दोनों बात करने की कोशिश ही कर रहे थे कि तब तक कॉफी भी आ गई। दोनों ने अपनी-अपनी कॉफी उठाई और पीने लगे। फिर अचानक से सौरभ ने सुधा से उसके बारे में पूछा कि उसके घर में कौन-कौन है। सुधा ने बताया कि वह अपने दादाजी के साथ रहती है और उसके दादाजी के अलावा उसका इस दुनिया में कोई नहीं है। सौरभ को यह जानकर बहुत दुख हुआ कि इस दुनिया में सुधा का उसके दादाजी के अलावा कोई नहीं है। फिर उसने बड़े प्यार से सुधा की तरफ देखा और कहा कि "चिंता मत करो, अब तुम्हारा इस दुनिया में दादाजी के अलावा मैं भी हूँ।" यह बात सुनकर सुधा एकदम से शर्मा गई। उसे यह बात जानकर बहुत अच्छा लग रहा था।

कि सौरभ उसे अपना मानता है। फिर सुधा ने भी उसके बारे में पूछा, तो सौरभ ने बताया कि वह यहाँ अपनी दादीजी के साथ रहता है, और उसके मम्मी-पापा यूएसए में रहते हैं, वहाँ उनका बिज़नेस है। उसकी दादीजी का मन यहीं लगता है इसलिए वह अपनी दादीजी के साथ यहीं रहता है। फिर उन दोनों में थोड़ी इधर-उधर की बातें हुईं, तब तक वक्त हो चला था। सुधा को घर जाना था तो सौरभ ने उसे घर छोड़ दिया। सुधा ने खुशी से झूमते हुए जैसे घर में कदम रखा कि उसने देखा कि दादाजी उसका इंतज़ार कर रहे थे। उनके चेहरे पर एक अजीब सी चमक थी, उन्होंने सुधा को देखा और देखते ही एकदम से उसे गले लगा लिया। सुधा को बड़ा अजीब लग रहा था कि अचानक से दादाजी को हुआ क्या है, वह आज इतने खुश क्यों हैं? क्योंकि सुधा जानती थी कि दादाजी इतना खुश बहुत ही कम और बहुत ही खास मौकों पर होते हैं। उसने दादाजी से पूछा– "दादाजी क्या बात हुई? आज इतने खुश कैसे हो?" तो दादाजी ने बताया कि कल उनका एक बहुत ही खास दोस्त मैंबो यूएसए से आने वाला है।

8

हालांकि उनका असली नाम संजय कुमार था, लेकिन सब उन्हें मैंबो अंकल ही बुलाते थे। दादाजी ने बताया कि वह कुछ दिनों के लिए मुंबई आ रहे हैं और वह हमारे यहाँ ही रुकेंगे, इसलिए मैं आज बहुत खुश हूँ। फिर दादाजी ने बताया कि मैंबो और वह एक ही गाँव में जन्मे थे, साथ में खेलते हुए बड़े हुए हैं। फिर मैंबो अंकल यूएसए चले गए और वह मुंबई आ गए। फिर उनकी बात फोन पर ही होती थी, मिलने का मौका कभी मिला नहीं। मैंबो अंकल के बारे में बात करते हुए दादाजी काफी खुश और रोमांचित लग रहे थे। मैंबो अंकल के आने की खुशी उनके चेहरे और बातों से साफ़ झलक रही थी। लेकिन शायद उन्हें यह नहीं पता था कि यही मैंबो अंकल उन्हें इस दुनिया का सबसे बड़ा जख्म देने वाला है। फिर सुधा और दादाजी आपस में मैंबो की और दूसरी बातें करते हुए खाना खाने बैठ गए और खाना खत्म कर दोनों अपने-अपने कमरे में चले गए सोने के लिए। सुधा अपने कमरे में आकर बिस्तर पर लेट गई लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। सौरभ के साथ आज बिताया हुआ पल उसे बार-बार याद आ रहा था।

लेकिन फिर जैसे-तैसे वह सोने की कोशिश करने लगी क्योंकि कल मैंबो अंकल आने वाले थे और उसे उनके स्वागत की काफी सारी तैयारियां करनी थीं। फिर जैसे-तैसे करके उसकी आँख लगी और सुबह कब हुई उसे पता ही नहीं चला। जब सुबह उसकी आँख खुली तो पता चला कि दादाजी तो कब के उठ गए थे, और मैंबो अंकल को एयरपोर्ट से लाने के लिए निकल रहे थे। दादाजी ने उसे बताया कि मैंबो की फ्लाइट टाइम पर ही है, मैं उसे लेने जा रहा हूँ, तुम खाने की तैयारी करके रखना। यह बोलकर दादाजी एयरपोर्ट के लिए निकल गए। इधर सुधा भी खाना बनाने की तैयारी में जुट गई। आज उसे मैंबो अंकल के लिए काफी सारी डिशेस बनानी थीं। सुधा खाना बना रही थी कि अचानक से डोरबेल की आवाज़ आई। वह समझ गई कि दादाजी मैंबो अंकल को लेकर आ गए हैं। सुधा ने तुरंत जाकर दरवाज़ा खोला तो देखा सामने दादाजी और मैंबो अंकल खड़े थे। मैंबो अंकल दादाजी की उम्र के ही थे लेकिन फिर भी दादाजी से काफी जवान लग रहे थे। हालांकि उनके बाल काफी उड़ गए थे।

10

लेकिन फिर भी वह काफी फिट लग रहे थे, शायद यूएसए के हवा-पानी का असर था। सुधा ने तुरंत मैंबो अंकल के पाँव छुए। मैंबो अंकल ने भी उसे खुश रहने का आशीर्वाद दिया और घर के अंदर आ गए। दोनों दोस्त काफी सालों बाद मिले थे तो बस फिर क्या, बातों का दौर जोरों-शोरों पर था। इधर सुधा किचन में दोनों के लिए चाय बनाने में जुटी हुई थी। दोनों दोस्तों ने चाय पी, फिर मैंबो अंकल नहाने के लिए चले गए। हालांकि इन सब के बीच सुधा ने महसूस किया कि मैंबो अंकल उसे बड़ी अजीब सी निगाहों से बार-बार देख रहे थे, जो कि नॉर्मल नहीं था। लेकिन फिर सुधा को लगा कि यह उसके मन का वहम होगा। यह सोचकर वह फिर से खाना बनाने में लग गई। तब तक मैंबो अंकल भी नहाकर आ चुके थे, फिर सब मिलकर खाना खाने बैठ गए। मैंबो अंकल तो सुधा के हाथों के बनाए हुए खाने के बस दीवाने ही हो गए थे। वह हर निवाले में सुधा के हाथों की और उसके बनाए हुए खाने की तारीफ किए ही जा रहे थे, और इधर दादाजी का सीना चौड़ा होता जा रहा था।

11

अपनी पोती की तारीफ सुनकर दादाजी बहुत खुश थे। खाना खाने के बाद तीनों आपस में बातें करने बैठ गए। बातों ही बातों में प्लान बना कि तीनों एक दिन के लिए गाँव जाएँ ताकि गाँव की पुरानी यादें ताज़ा की जा सकें, लेकिन सुधा ने मना कर दिया क्योंकि उसे अपनी तबीयत थोड़ी ठीक नहीं लग रही थी। मैंबो अंकल ने सुधा को बहुत फोर्स किया "तुम भी चलो", लेकिन सुधा ने साफ़ मना कर दिया और कहा कि "आप दोनों जाकर आओ, मुझे कुछ बुखार जैसा लग रहा है।"तो आखिर में फिर दादाजी और मैंबो अंकल अकेले ही गाँव जाने के लिए मान गए। सब कुछ फिक्स होने के बाद सुधा अंदर चली गई रसोई का बाकी बचा हुआ काम निपटाने के लिए, और दादाजी और मैंबो अंकल लग गए गाँव जाने की तैयारी में, क्योंकि शाम को ही निकलना तय हो गया था। सुधा भी सारा काम निपटा कर अपने कमरे में गई और बिस्तर पर लेट गई। उसे कुछ ठीक नहीं लग रहा था, बुखार जैसा महसूस हो रहा था। थकी हुई भी थी, बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई। शाम को 4 बजे जब दादाजी ने जगाया, तब जाकर उसकी आँख खुली।

12

दादाजी और मैंबो अंकल गाँव के लिए निकल रहे थे। उसने उन दोनों को विदा किया और वापस से अपने कमरे में आ गई। बुखार के कारण उसका शरीर हल्का-हल्का तप रहा था, तो शाम का खाना बनाने का उसका बिल्कुल भी मन नहीं था। फिर मोबाइल चलाते-चलाते कब शाम के 6 बज गए उसे पता ही नहीं चला कि अचानक से डोरबेल बजी। उसने सोचा कि अभी कौन आया होगा? उसने उठकर दरवाज़ा खोला तो देखा सामने सौरभ खड़ा था। वह उसके लिए बाहर से उसका फेवरेट खाना लाया था, क्योंकि उसे बुखार था। सुधा एकदम से हक्की-बक्की रह गई कि सौरभ को कैसे पता चला कि उसको बुखार है और उसके दादाजी भी यहाँ नहीं हैं। फिर अचानक से उसे याद आया कि यह बात तो उसने सिर्फ अपनी बेस्टफ्रेंड निशा को ही बताई थी, शायद उसने सौरभ को बता दिया था। उसको एकदम से निशा पर गुस्सा आया कि एक छोटी सी बात भी उसके पेट में नहीं टिकती है, लेकिन जैसे ही उसने सौरभ की ओर देखा, उसका सारा गुस्सा शांत हो गया। वह कितना प्यारा लग रहा था और उसका कितना ख्याल था उसे।

13

उसने सौरभ को अंदर आने का इशारा किया। वह अंदर आकर सोफे पर बैठ गया। सुधा ने कहा "इसकी क्या जरूरत थी?" तो सौरभ ने प्यार से कहा "बिल्कुल जरूरत थी, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, घर पर भी तुम अकेली हो तो कोई तो होना चाहिए तुम्हारा ख्याल रखने वाला।" सुधा यह सुनकर एकदम से मदहोश हो गई कि दादाजी के बाद कोई और भी है उसे इतना चाहने वाला, उसका ख्याल रखने वाला। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, सौरभ को थैंक यू कहा और उसे चाय के लिए पूछा, लेकिन सौरभ ने मना कर दिया कि "अब सीधा खाना ही खाएंगे, मैं तुम्हारे साथ अपना भी लाया हूँ।" सुधा अंदर गई और खाना प्लेट्स में डालकर ले आई और फिर दोनों मिलकर खाना खाने लगे। बातों ही बातों में सौरभ ने बताया कि उसे और दादीजी को एक या दो दिन में कुछ दिनों के लिए यूएसए जाना है, क्योंकि पापा की तबीयत ठीक नहीं है। यह सुनकर सुधा को एकदम से धक्का लगा कि यह यूएसए जा रहा है और मुझे अब तक बताया भी नहीं, अभी बता रहा है।

14

फिर अचानक से उसके मन में ख्याल आया शायद भूल गया होगा या फिर बताना नहीं चाहता होगा कि मुझे फालतू में दुख होगा। फिर उसने सोचा बताना तो अब भी पड़ा, दुख तो अब भी हो ही रहा है। लेकिन सुधा ने कुछ नहीं कहा बस यही कहा कि "अपना ध्यान रखना और जाने से पहले एक बार मिलकर जाना।" और फिर चुपचाप से खाना खाने लगी। उसका मन अचानक से उदास हो गया था कि सौरभ यूएसए जा रहा है तो अब कई दिनों तक शायद उससे मुलाकात नहीं हो पाएगी। दोनों ने खाना खत्म किया फिर चुपचाप से बैठ गए। सुधा का मन उदास था सौरभ का यूएसए जाना सुनकर। सौरभ शायद यह बात समझ गया था। थोड़ी देर बाद वह उठा और सुधा के पास आकर बैठ गया और उसने हौले से सुधा का हाथ अपने हाथों में लिया और फिर अपने हाथों से सुधा का चेहरा ऊपर किया तो उसने देखा कि सुधा की आँखों में आँसू थे। यह देखकर वह अंदर तक सिहर गया। उसने अपने हाथों से सुधा की आँखों के आँसू साफ़ किए और उसके गालों को चूमा। सुधा एकदम से दंग रह गई।

15

हालांकि वह यहीं नहीं रुका, उसके बाद उसने अपने होंठ सुधा के होंठों पर रख दिए और उसके होंठों को चूमने लगा। यह सब इतना जल्दी हुआ कि सुधा को कुछ समझ में नहीं आया कि सौरभ कर क्या रहा है, लेकिन सौरभ का उसको इस तरह से चूमना अच्छा लग रहा था। सुधा अब जवान हो चली थी, और वैसे भी जिसे वह पसंद करती उसका इस तरह से उसे चूमने में अच्छा लगना स्वाभाविक था। हालांकि सौरभ शायद आज यहीं तक रुकने के मूड में नहीं था, या शायद वह बहक रहा था और साथ ही में सुधा भी बहक रही थी या फिर वह सौरभ को रोक नहीं पा रही थी। फिर सौरभ ने धीरे से अपने हाथ सुधा के सीने पर रख दिए और हल्का-हल्का दबाने लगा। सुधा के लिए यह सब पहली बार था, वह सौरभ को रोकना चाहती थी लेकिन वह रोक नहीं पा रही थी, और न ही सौरभ आज रुकने का नाम ले रहा था। फिर सौरभ ने सुधा का हाथ पकड़ा और उसे रूम में ले गया। सुधा भी बिल्कुल कठपुतली की तरह सौरभ के साथ उसके पीछे-पीछे चल पड़ी।

आगे किया हुआ होगा उस कमरे में,
क्या सौरभ और सुधा के बीच की सारी दूरियां मिट गई,

क्या वो दोनो पूरी तरह से बहक गए थे,

क्या थी मेंबो अंकल की चाल और क्या सुधा बच पाएगी इस जाल से,

क्या सौरभ उसे फिर कभी मिल पाएगा, या उन दोनो का प्यार अधूरा ही रह जायेगा,

क्या मैंबो अंकल को उसके किए की सजा मिल पाएगी, या सारी उम्र सिर्फ बंधक बन कर रह जायेगी,

जानने के लिए साइट के बिलकुल नीचे दिए गए ग्रीन बटन पर क्लिक करके अभी पूरा पढ़े रोमांच, थ्रिलर और सस्पेंस से भरी सुधा की कहानी बंधक